शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा पर मुफ्त महिला शिक्षा नीति का प्रभाव

पवन कुमार
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, डीसी कम्पौड़, धारवाड़

भूमिका

सृष्टि को संचालित करने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व नारी कन्धों पर रहा है। यह अपने आप में एक अद्‌भुत रोमांचक और मधुर अनुभव है। प्रचीन समाज के परिपेक्ष्य में स्त्रियों को मातृ स्वरूपा, जन–समाज की जन्मदात्री और मॉ भगवती स्वरूपा माना गया है। वैदिक संस्कृति में स्त्रियों को ज्ञान, शक्ति और श्री का प्रतीक माना जाता है। समाज में पुरूष के बिना स्त्री को और स्त्री के बिना पुरूष को अधूरा माना गया है। इसलिये स्त्री को ''अर्धागिनी'' कहा जाता है। संस्कृति के विकास में स्त्रियों का क्विेष योगदान रहा है।

एक समय स्त्री शिक्षा पर खुले आम आलोचना होती थी। अभिभावक लड़कियों को शिक्षा देना पसन्द नहीं करते थे। स्वतन्त्रता के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में नारी शिक्षा एक महत्वूपर्ण पक्ष रहा है। हरियाणा सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया है। समय–समय पर हरियाणा सरकार स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है। जिस कारण स्त्री साक्षरता दर बढ़ी है। स्त्री शिक्षा के विकास का स्तर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पहले की अपेक्षा सुधरा है। यह हरियाणा सरकार की मुफ्त स्त्री शिक्षा नीतियों का ही फल है कि आज स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा का स्थान अग्रणीय है क्योंकि अगर समाज शिक्षित होगा तो तभी सम्पूर्ण समाज का विकास सम्भव होगा। इसलिए समाज का विकास करने के लिए सबसे पहले समाज को शिक्षित करना जरूरी है। अगर समाज शिक्षित होगा तो तभी वह अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति सजग रह सकता है। इसी उद्‌देश्य को लेकर हरियाणा सरकार स्त्री शिक्षा पर अपेक्षाकृत ध्यान दे रही है।

हरियाणा में स्त्री शिक्षा

इसी प्रकार हरियाणा में भी महिलाओं की सामाजिक स्थिति पिछड़ी हुई हैं विशेषकर गामीण क्षेत्रों में। हरियाणा पुरूष प्रधान क्षेत्र है। पितृ सत्तात्मक परिवारों में पुरूष मुखिया होता है। सम्पति पर अधिकार, वंश नाम सभी के पुरूष अगणी है। परिवार में समाज में पुत्र की माँ होना गर्व दिलाता है। अतः यहाँ पुत्र जन्म ही आकांक्षित है। संरचनात्मक विरोधाभास के रूप में एक ओर स्त्री परिवार व समाज की रीढ़ है तो दूसरी ओर कन्या जन्म उपेक्षित है। हरियाणा राज्य के बने हुए 43 वर्ष पूरे हो गए हैं। इन पिछले 43 वर्षो में हरियाणा ने सभी क्षेत्रों में विकास किया है। जिनमें शिक्षा के क्षेत्र में राज्य के लोगों ने महत्वपूर्ण विकास किया है। विशेष रूप से स्त्री शिक्षा के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए है। कुल मिलाकर राज्य में स्त्री शिक्षा कें क्षेत्र में सुधार हुआ है। परन्तु स्वतंत्रता प्रापति के पश्चात् पिछले 50 वर्षों में स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। महिलाओं में साक्षरता जो कि 1966 में 9.20 प्रतिशत जो कि 2001 में बढ़कर 40.94 प्रतिशत हो गई।

हरियाणा के ग्रामीण क्षत्रों में शिक्षा का स्तर लड़कीयों में लड़को की अपेक्षा कम रहा हैं जिसका कारण सामाजिक विशमता एवं कुरीतियां रही हैं। हरियाणा में महिलाएं एक लम्बे अन्तराल से सामाजिक प्रताड़ना, उत्पीड़न और अन्याय की शिकार रही हैं उनकी इस स्थिति के लिए उनकी अशिक्षा भी उतरदायी रही है।

उपरोक्त आंकड़ो से स्पष्ट हैं कि हरियाणा के लगभग सभी जिलों में वर्ष 2001 से वर्ष 2011 के दौरान लगभग सभी जिलों में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की साक्षरता की दर कम हैं। इस राज्य में साक्षरता दर की कमी का कारण यह नहीं हैं कि यहां स्कूलों की कमी हैं बल्कि लड़कीयों को स्कूल में न भेजना या पढ़ाई को बीच में ही छुड़वाने की यहां के लोगों की छोटी मानसिकता हैं। व अन्य बहुत से कारण है जैसे – गरीबी, श्क्षिा को जरूरी न समझना, घरेलू कार्यों की मजबुरियां, घर में बच्चों व अन्य सदस्यों की देखभाल करना आदि हैं। इसका कारण यह भी हैं कि हरियाणा में लड़को की पढ़ाई पर ज्यादा जोर दिया जाता हैं। जबकि लड़कीयां आगे पढ़ना चाहती हैं तब भी उन्हें पढ़ाया नहीं जाता या उनकी पढ़ाई बीच में ही रोक दी जाती हैं।

महिलाओं का निम्न साक्षरता स्तर होने के कारण सरकार द्वारा महिला साक्षरता वृद्धि हेतु निम्न कार्य–नितियां अपनाई गई 1 प्रकार्यात्मक साक्षरता हेतु राष्टीय साक्षरता मिशन 2 अनौपचारिक शिक्षा 3 सर्व शिक्षा अभियान 2007।

स्त्री शिक्षा के विकास पर मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति का प्रभाव

एक नवम्बर, 1966 को जब हरियाणा राज्य का जन्म हुआ था तब यह एक पिछड़ा हुआ प्रदेश था। उसके पश्चात् राज्य सरकार और लोगों ने अपनी मेहनत और लगन के बल से प्रदेश को यह ख्याति दिला दी कि यह प्रदेश विकास प्रक्रिया का 'आदर्श राज्य' बन गया। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रदेश में सन्तोषजनक विकास हुआ है। प्रदेश की साक्षरता दर 66.65 प्रतिशत है जिसमें स्त्री साक्षरता दर 59.21 प्रतिशत है। हरियाणा देश का पहला ऐसा राज्य जहां स्त्रियों की शिक्षा स्नातक कक्षा तक निःशुल्क प्रदान की जाती है। यह निःशुल्क शिक्षा 'मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति' के तहत सन् 1991 में 10वीं कक्षा तक प्रदान की जानी शुरू हुई है। उसके बाद अगले वर्ष अर्थात् सन् 1992 से निःशुल्क शिक्षा 10वीं कक्षा से बढ़ाकर स्नातक कक्षा तक दी जाने लगी। इस शिक्षा नीति के कारण ही आज हरियाणा राज्य की स्त्री साक्षरता दर का अन्य राज्य की तुलना के कहीं ज्यादा प्रतिशत हैं।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

दत्त 1982 ने हरियाणा में लड़कियों की शिक्षा के पिछड़ेपन का अध्ययन किया और निम्नलिखित सुझाव दिये :–

- सिरसा जिले में छटी कक्षा में स्कूल छोड़ने वाली छात्राओं की अधिकतम संख्या 33.7 प्रतिशत थी तथा न्यून्तम 11.6 प्रतिशत प्रथम कक्षा के लिए थी । महेन्द्रगढ़ जिले में स्कूल छोड़ने वाले छटी कक्षा की छात्राओं की अधिकतम संख्या 37.2 प्रतिशत थी और प्रथम कक्षा के लिए न्यूनतम संख्या 9.4 प्रतिशत थी। इसी प्रकार 7वीं कक्षा के लिए अधिकतम संख्या 26.3 प्रतिशत तथा दूसरी कक्षा के लिए न्यूनतम 5.9 प्रतिशत थी । महेन्द्रगढ़ जिले में ये दर संख्या क्रमशः 47.69 प्रतिशत, 28.9 प्रतिशत तथा 48.93 प्रतिशत थी ।

- छात्राओं में स्कूल छोड़ने के मुख्य कारण थे – अध्यापकों का असामान्य व्यवहार, जाति भेद, गरीबी, माता–पिता के साथ काम में हाथ बटांना, छोटे बच्चों की देखभाल करना, लड़कियों की शिक्षा के प्रति माता–पिता की उदासीनता, बाल–विवाह, अध्ययन में रूचि की कमी, असंगत पाठ्यक्रम तथा गावों में लड़कियों के लिए अलग स्कूल की व्यवस्था न होना ।

सिंह 1983 ने 1971 से 1981 के दौरान हरियाणा राज्य में शिक्षा के विकास का अध्ययन किया । अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :–

- पुरूषों के मुकाबले में महिलाएं बहुत कम शिक्षित थीं । इसका मुख्य कारण है माता–पिता की अनपढ़ता, अन्धविश्वास तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की सुविधा कम होना।
- गाँव में शिक्षा की दर बहुत कम थी जब कि शहरों में बहुत अधिक ।

ठाकुर 1987 ने भी हरियाणा में स्त्री शिक्षा का विकास का अध्ययन किया ''1947–81''। इसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:–

- शोधकर्ता ने पाया कि अनपढ़ता की प्रतिशतता बहुत अधिक थी। प्राईमरी, मिडल तथा उच्च स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता बहुत निम्न थी ।
- 1947 से 1966 तक कुल विद्यार्थियों में से छात्राओं की प्रतिशतता प्राईमरी स्तर पर अधिक बढ़ी थी किन्तु सैकेन्डरी स्तर पर उससे कम थी ।

उर्मिला 1994 ने भी हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा का विकास एवं इसमें बाधक कारणों का अध्ययन किया । इसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

- शोधकर्ता ने पाया हरियाणा राज्य बनने के उपरान्त प्राईमरी शिक्षा का विकास संतोषजनक रहा। 1966 में हरियाणा में लड़कियों के लिए प्राईमरी स्कूलों की संख्या 257 थी जो 1985 में बढ़कर 548 हो गई । आज यह संख्या 788 है ।
- 1996–2001 तक छात्राओं की संख्या 91526 तक पहुंच गई । 1966 से 1991 तक छात्राओं की संख्या तथा कुल विद्यार्थियों की संख्या की प्रतिशतता में 28 प्रतिशत से 54.37 प्रतिशत की वृद्धि हुई । 1992 से 2008 तक छात्राओं की संख्या में 17 प्रतिशत वृद्धि हुई है ।

वीरमती (1995) ने हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा (1964–1994) के विकास का अध्ययन किया । इस अध्ययन में उसने पाया कि 1980 से 1981 तक इस श्रेणी के विद्यार्थियों में लगातार वृद्धि होती चली गई । विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने का मुख्य कारण सरकार द्वारा उनको दी जाने वाली शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं जैसे – मुफ्त शिक्षा, पुस्तकें, वजीफे एवं छात्र–वृत्ति प्रदान करना था ।

सुरेश भान (1997) ने हरियाणा सरकार की लड़कियों की मुफ्त शिक्षा नीति का ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन किया । उन्होंने अध्ययन में पाया कि 1996 से लेकर 1991 तक कुल विद्यार्थियों की संख्या में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि हुई है । यह संख्या की प्रतिशतता 28 प्रतिशत से बढ़कर 44.35 प्रतिशत हो गई । किन्तु विडम्बना इस बात की थी कि सैकेण्डरी स्तर पर छात्राओं की प्रतिशतता 36:97 और प्राईमरी स्तर पर 44.35 प्रतिशत थी जो कि कम है ।

तिवारी (2002) ने अपने शोध में हरियाणा में विद्यालय जाने वाली छात्राओं के लिए शिक्षा से सम्बन्धित योजनाओं का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन में जाग्रति मण्डल तथा किशोरी बालिका योजना महत्वपूर्ण योजनाएँ हैं। शोध को 40 गाँवों में 371 बालिकाओं के साक्षात्कार द्वारा विवेचित किया गया है। महेन्द्रगढ़ जिले में महिला साक्षरता 1991 से 2001 तक 36.5 प्रतिशत से 54.61 प्रतिशत हो गई। रेवाड़ी जिले में महिला साक्षरता दर 1991–2001 में 46.3 प्रतिशत से 61.45 प्रतिशत तक हो गई हरियाणा में महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि पाई गई।

गुलजार सिंह (2012) ने हरियाणा में 1998 से अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की शिक्षा का विकास पर एक अध्ययन किया, इसके मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार से हैं ।

अनुसूचित जातियों के लड़के और लड़कियों की संख्या प्राईमरी स्तर पर 13.94 प्रतिशत और माध्यमिक स्तर पर 58.42 प्रतिशत की वृद्धि हुई । विभिन्न स्तरों पर अनुसूचित जाति के लड़के और लड़कियों की संख्या में 1998 से 2010 तक 159494 से 202043 की वृद्धि हुई । इस 26.68 प्रतिशत की वृद्धि से पता चलता है कि हरियाणा में अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की शिक्षा में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई है ।

पुष्पा (2013) ने पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान अहीरवाल क्षेत्र में स्त्री शिक्षा के विकास का अध्ययन किया । इसके मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार हैं :–

- तहसील स्तर पर रेवाड़ी और गुड़गॉव को छोड़कर सभी तहसीलों में छात्राओं की शिक्षा संस्थानों की संख्या में धीरे–धीरे वृद्धि हुई है ।
- क्षेत्रीय स्तर पर पाया गसा कि इस समय के दौरान शिक्षा संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है जब कि वर्ष 2009–10 में क्षेत्रीय स्तर पर उच्चतम 81.3 प्रतिशत वृद्धि पाई गई ।
- तहसील स्तर पर गुड़गॉव को छोड़कर जहॉ वर्ष 2009–10 और 2012–13 में लड़कियों की संख्या में कमी पाई गई वहीं बाकी सब तहसीलों में इस संख्या में वृद्धि हुई हैं ।
- क्षेत्रीय स्तर पर हमें ज्ञात होता है कि छात्राओं की संख्या में धीरे–धीरे वृद्धि हुई जब कि 2009–10 में ग्रामीण स्तर पर उच्चतम 25.81 प्रतिशत वृद्धि पाई गई ।

मनजीत कौर (2014) ने हरियाणा में शिक्षा के विकास का अध्ययन किया। जहॉ स्कूलों, अध्यापकों तथा नर्सरी शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं का अकाल पड़ा था । यहॉ प्राईमरी, सैकेण्डरी और उच्च शिक्षा के लिए कोई संकेत नहीं था ?

अनुराधा (2014) ने हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा के विकास का अध्ययन किया । इसमें पाया गया कि 2009–10 के बाद इस श्रेणी के विद्यार्थियों में लगातार वृद्धि होती चली गई । विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने का मुख्य कारण सरकार द्वारा उनको दी जाने वाली शिक्षा संबंधी सुविधाओं जैसे– मुफ्त शिक्षा, पुस्तकें तथा वजीफे एवं छात्र वृत्ति प्रदान करना था ।

समस्या के उद्धेश्य

सरकार की लड़कियों की मुफ्त शिक्षा नीति के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिसीमाएं

यह शोध कार्य निम्नलिखित परिसीमाओं के अन्तर्गत किया गया–

- इस शोध कार्य में हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्र के कुरूक्षेत्र जिले के गाँव ज्योतिसर व यमुनानगर जिले के गाँव भटौली तथा कुरूक्षेत्र जिले के शहरी क्षेत्र थानेसर व यमुनानगर जिले के जगाधरी में राज्य सरकार की लड़कियों को मुफ्त शिक्षा योजना का लड़कियों की स्कूलों में उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन है

शोध–विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए आवश्यक आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रतिचयन का चयन

वर्तमान शोध में शोधकर्ता ने कुरूक्षेत्र जिले के गाँव ज्योतिसर व यमुनानगर जिले के भटौली गाँव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में आठवीं से 10+2 कक्षा तक के आँकड़ें प्राप्त किये । तथा कुरूक्षेत्र जिले के शहरी क्षेत्र थानेसर व यमुनानगर जिले में जगाधरी शहर के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में आठवीं से 10+2 कक्षा तक के आँकड़े प्राप्त किये। शोधकर्ता ने जिस प्रतिचयन का चयन किया वह असम्भाव्य प्रतिचयन के अन्तर्गत उद्देश्य पूर्ण प्रतिचयन के आधार पर किया है।

क्षेत्र	छात्राएं व महिलायें
ग्रामीण	200
शहरी	200

उपकरण

इस शोध के लिए शोधकर्ता ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है

अन्तर्गत क्षेत्र

इस शोधकार्य में शोधकर्ता ने हरियाणा राज्य के कुरुक्षेत्र जिले व यमुनानगर जिले का चयन किया है । शोधकर्ता ने कुरुक्षेत्र जिले के गाँव ज्योतिसर और थानेसर (शहर) व यमुनानगर के गाँव भटौली और शहर जगाधरी को अपने कार्य सम्पन्न करने के लिए चयनित किया है ।

विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन के इस भाग में उस प्रश्नावली का विश्लेषण और व्याख्या की गई है जो प्रश्नावली शोधकर्ता द्वारा कुरुक्षेत्र जिले के 100 ग्रामीण व 100 शहरी छात्राओं व ग्रामीण महिलाओं द्वारा भरवाई गई है व यमुनानगर जिले के 100 ग्रामीण व 100 शहरी छात्राओं द्वारा भरवाई गई है । प्रश्नावली का अध्ययन इस प्रकार से किया गया है – एक सहमत और दूसरा असहमत । इसके पश्चात् प्रत्येक प्रश्न पर χ^2 (काई^2) परीक्षण लगाकर इस न्यादर्श की सार्थकता की जाँच की गई है । प्रश्नावली के सभी प्रश्नों को निम्नलिखित प्रकार से एक–एक करके X^2 परीक्षण लगाकर इस प्रश्नावली की व्याख्या और विश्लेषण किया गया है:

प्रश्न नं० 1 :मेरा परिवार लड़की को पढ़ाना बेहद पसन्द करता है?

तालिका 1

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	153	47	9.97	0.01स्तर
	fe	165	35		
शहरी	f0	177	23		
	fe	165	35		

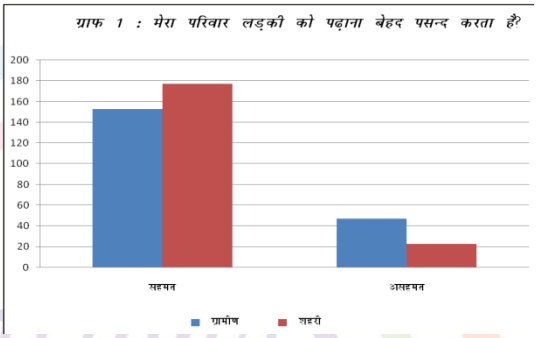

तालिका 1 के अन्तर्गत कुल 400 छात्राओं के द्वारा उनके परिवारों के बारे में यह जानकारी प्राप्त की गई हैं कि कितने परिवार लड़की को शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में है। शोधकर्ता ने यह पाया कि 330 परिवार अपने लड़की को पढ़ाने के लिए सहमत है और 70 परिवार लड़की को पढ़ाने के लिए असहमति दर्शा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के 200 परिवारों में से 153 परिवार सहमत और 47 परिवार असहमत है। शहरी क्षेत्रों के 177 परिवार सहमत और 23 परिवार असहमत है। इससे यह ज्ञात होता है गाँव की अपेक्षा शहर के परिवारो की सोच लडकियों को पढ़ाने में सकारात्मक हैं। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् ग्2 का मूल्य 9.97 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को दर्शाता है। 0.01 स्तर की सार्थकता से यह सिद्ध होता है कि सहमत और असहमत परिवारों के बीच इतना बड़ा अन्तर आकस्मिकता के कारण नहीं आया। ग्रामीण व शहरी परिवार के लोगों पर हरियाणा सरकार की मुफ्त महिला शिक्षा नीति का प्रभाव ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में समान रूप से परिदर्शित हुआ। लगभग शत–प्रतिशत परिवार लड़की को पढ़ाना पसन्द करते हैं ।

प्रश्न नं० 2 :स्त्री शिक्षा को बढ़ाने में शिक्षित माता–पिता का योगदान होता है ?

तालिका 2

		सहमत	असहमत	X2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	192	8	3.46	0.01स्तर
	fe	187.5	12.5		
शहरी	f0	183	17		
	fe	187.5	12.5		

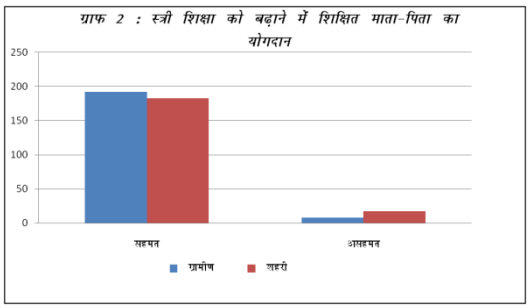

तालिका 2 से हमें यह जानकारी मिली कि स्त्री शिक्षा को बढ़ाने में शिक्षित माता–पिता का योगदान महत्वपूर्ण होता है जिसमें हमें यह देखने को मिला की 400 छात्रों में से 375 छात्राएं व महिलायें इस बात के लिए सहमत है की स्त्री शिक्षा को बढ़ाने में शिक्षित माता–पिता का योगदान महत्वपूर्ण होता है व और 25 छात्राएं इस कथन से असहमत है । ग्रामीण क्षेत्रों के 200 परिवारों में से 192 परिवार सहमत और 8 परिवार असहमत है। शहरी क्षेत्रों के 200 परिवारों में से 183 परिवार सहमत और 17 परिवार असहमत है। इससे यह ज्ञात होता है शहर की अपेक्षा गाँव के परिवारो का यह मानना होता है की स्त्री शिक्षा को बढ़ाने में शिक्षित माता–पिता का योगदान ज्यादा होता है। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् ग्2 का मूल्य 3.46 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को दर्शाता है। इस सार्थकता से यह सिद्ध होता है कि स्त्री शिक्षा को बढ़ाने में शिक्षित माता–पिता का महत्वपूर्ण योगदान है। माता–पिता अपने लड़कों के समान ही लड़कियों को पढ़ाने में भी रूचि दिखाने लगे हैं ।

प्रश्न नं० 3 : आपके माता–पिता लड़की को उच्च शिक्षा दिलाने के पक्ष में हैं?

तालिका 3

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	158	42	28.49	0.01स्तर
	fe	175.5	24.5		
शहरी	f0	193	7		
	fe	175.5	24.5		

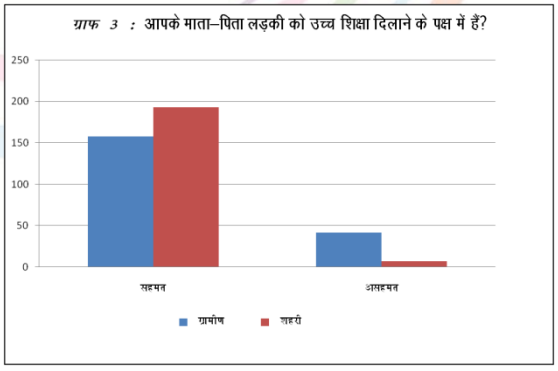

तालिका 3 से हमें यह जानकारी मिली कि माता–पिता लड़की को उच्च शिक्षा दिलाने के पक्ष में हैं । 400 छात्राओं व महिलाओं में से 351 छात्राएं सहमत हैं कि उनके परिवार में लड़की को उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है और 49 छात्राएं इस कथन से असहमत हैं ग्रामीण क्षेत्रों के 200 परिवारों में से 158 परिवार सहमत और 42 परिवार असहमत है। शहरी क्षेत्रों के 200 परिवारों में से 193 परिवार सहमत और 7 परिवार असहमत हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि गाँव की अपेक्षा शहर के लोग लड़की को उच्च शिक्षा दिलवाना चाहते हैं और गाँव के बहुत कम लोग लड़की को उच्च शिक्षा दिलवाने के पक्ष में हैं । इससे यह ज्ञात होता है की हरियाणा सरकार की नीतियों का प्रचार–प्रसार शहर के मुकाबले

गाँव में बहुत कम हुआ हैं। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 28.49 आया है जो कि 0. 01 स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। इस सार्थकता से यह सिद्ध होता था कि अधिकतर परिवार लड़की को उच्च शिक्षा दिलाने के पक्ष में हैं ।

प्रश्न नं० 4 : क्या आपके परिवार में शिक्षा से सम्बन्धित लड़की या लड़के में भेदभाव किया जाता है?

तालिका 4

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	167	33	112.62	0.01स्तर
	fe	114.5	85.5		
शहरी	f0	169	31		
	fe	114.5	85.5		

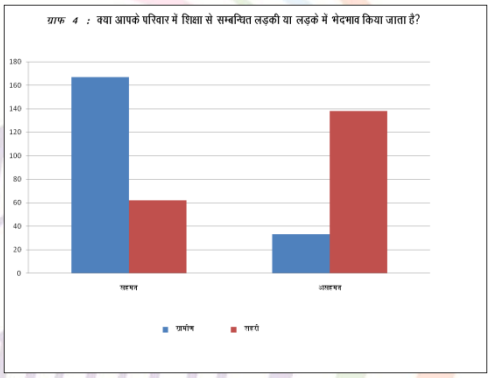

तालिका 4 से हमें यह जानकारी प्राप्त हुई कि 400 छात्राओं में से 229 छात्राएं मानती हैं कि उनके परिवार में शिक्षा से सम्बन्धित लड़की या लड़के में भेदभाव किया जाता है और 171 छात्राएं यह मानती थी कि उनके परिवार में भेदभाव नहीं किया जाता है । यदि ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जाये तो 200 में से 167 लड़कियां इस बात से सहमत है कि उनके परिवार में शिक्षा सम्बन्धित लड़की या लड़के में भेदभाव किया जाता है व 33 लड़कियां इस बात से असहमत है व शहरी क्षेत्रों के 200 परिवारों में से 62 परिवार सहमत और 138 परिवार असहमत हैं। इस से यह पता चला कि हरियाणा के अधिकतर ग्रामीण परिवारो में शिक्षा सम्बन्धित लड़की या लड़के में भेदभाव किया जाता है। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 112.62 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। सार्थकता के इस स्तर से यह पता चला कि अधिकतर परिवारों में शिक्षा सम्बन्धित लड़की या लड़के में भेदभाव नहीं किया जाता ।

प्रश्न नं० 5 : यदि आपके साथ शिक्षा के सम्बन्ध में भेदभाव किया गया तो क्या आप इसका विरोध करेंगी?

तालिका 5

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	123	77	26.84	0.01स्तर
	fe	146	54		
शहरी	f0	169	31		
	fe	146	54		

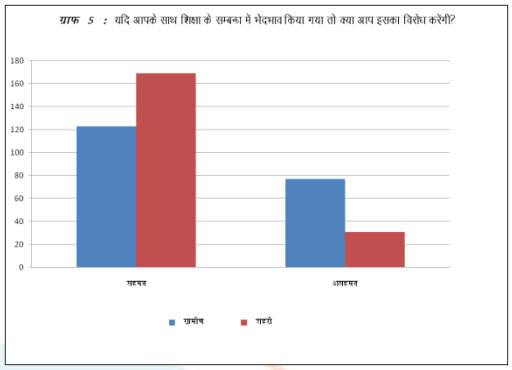

तालिका 5 से यह पता चलता है कि 400 लड़कियों में से 292 यह मानती हैं कि यदि शिक्षा के लिए उनके साथ भेदभाव किया गया तो वे इसका विरोध करेंगी। जब कि 108 छात्राएं यह मानती हैं कि वे विरोध नहीं करेंगी। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में देखा जाऐ तो पता लगा की 200 में से 123 ग्रामीण व 200 में से 169 शहरी लड़कियों ने माना की शिक्षा के लिए उनके साथ हो रहे भेदभाव का विरोध करेंगी और वहीं 200 में से 77 ग्रामीण व 200 में से 31 शहरी लड़कियों ने माना कि शिक्षा के लिए उनके साथ हो रहे भेदभाव का वे विरोध नहीं करेंगी । इससे यह पता चला कि अधिकतर लडकीयों का ऐसा मानना हैं कि वे अपने खिलाफ हो रहे भेदभाव को नहीं सहेंगी और वे इसके विरोध में खुलकर लड़ेंगे । X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 26.84 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। सार्थकता के इस स्तर से यह ज्ञात होता है कि अधिकतर छात्राएं ऐसा मानती हैं कि वे अपने खिलाफ भेदभाव को नहीं सहेंगी और वह इसका विरोध करेंगीं।

प्रश्न नं० 6 :मेरे विचार में सहशिक्षा उचित है?

तालिका 6

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	156	44	15.37	0.01स्तर
	fe	170	30		
शहरी	f0	184	16		
	fe	170	30		

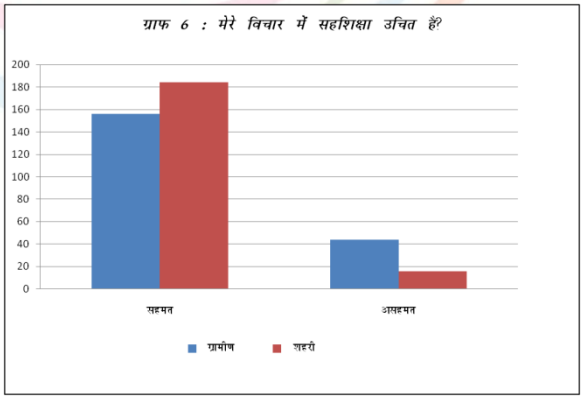

तालिका 6 सारणी से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 400 छात्राओं में से 340 छात्राएं यह मानती हैं कि सह–शिक्षा उचित है जब कि 60 छात्राएं सह–शिक्षा को उचित नहीं मानती हैं। ग्रामीण व शहरी परिवार की अधिकांश छात्राएं सहशिक्षा को उचित मानती है। 200 ग्रामीण छात्राओं में से 156 छात्राओं का सहमत है व 44 छात्राओं का असहमत है। इसका मुख्य कारण कहीं ना कहीं ग्रामीण क्षेत्रों के परिवारो वालो का अशिक्षित होना भी

हो सकता हैं । X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 15.37 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। सार्थकता के इस स्तर से यह पता चला कि ग्रामीण व शहरी परिवार के अधिकतर व्यक्तियों का स्त्री–शिक्षा के प्रति सोच में परिर्वतन निश्चित हुआ है। इसलिए अधिकतर छात्राएं ऐसा मानती है कि सहशिक्षा को उचित हैं।

प्रश्न नं० 7 : मेरे माता–पिता गृहकार्य करवाते हैं?

तालिका.7

		सहमत	असहमत	X2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	188	12	12.75	0.01स्तर
	fe	176.5	23.5		
शहरी	f0	165	35		
	fe	176.5	23.5		

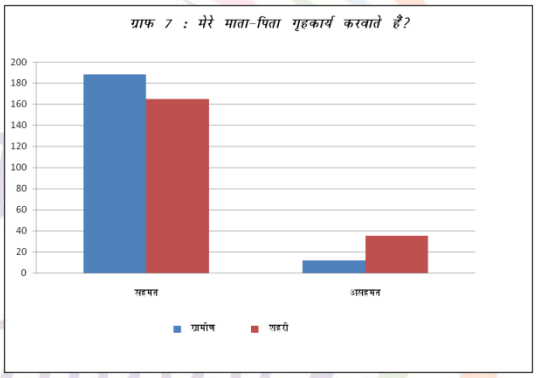

उपरोक्त तालिका 7 के अन्तर्गत 400 छात्राओं से यह जानकारी ली गई हैं कि उनके माता–पिता गृहकार्य करवाते हैं या नहीं। जिनमें से 353 छात्राएं इससे सहमत है और 47 छात्राएं असहमत हैं। सारणी से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के अधिकतर परिवार लड़कियों से गृह कार्य करवाते हैं। प्राप्त आंकडो से स्पष्ट होता है कि लड़कियों से गृह कार्य गाँवमें शहर की तुलना से अधिक करवाया जाता हैं । X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 12.75 आया है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। सार्थकता के इस स्तर से यह पता चला कि अधिकतर न्यादर्श ऐसा मानते थे कि उनके माता–पिता उनसे गृहकार्य करवाते हैं ।

प्रश्न नं० 8 : मेरे विचार में पुरुषों के मुकाबले स्त्री शिक्षा का महत्व ज्यादा है?

तालिका 8

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	185	15	2.26	0.01स्तर
	fe	188.5	11.5		
शहरी	f0	192	8		
	fe	188.5	11.5		

तालिका 8 सारणी से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 400 छात्राओं में से 377 छात्राएं इस बात के लिए सहमत है कि पुरुषों के मुकाबले स्त्री शिक्षा का ज्यादा महत्व है और 23 छात्राएं इस बात से असहमत है । गाँव व शहरों की अधिकतर छात्राओं का यह मानना है कि पुरुषों के मुकाबले स्त्री शिक्षा का ज्यादा महत्व है यह उनके शिक्षा के बढते स्तर को दर्शाता है । X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 2.26 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। सार्थकता के इस स्तर से सिद्ध होता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों की महिलाओं की सोच में ज्यादा अन्तर नहीं है और अधिकतर महिलाओं का यह मानना है की पुरुषों के मुकाबले स्त्री शिक्षा का महत्व ज्यादा है।

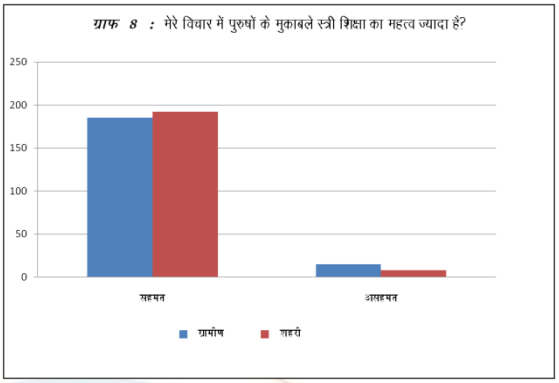

प्रश्न नं० 9 : एक लड़के को शिक्षित करना केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करना है। जब कि एक लड़की को शिक्षित करना दो परिवारों को शिक्षित करना है?

तालिका 9

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	189	11	0.50	0.01स्तर
	fe	190.5	9.5		
शहरी	f0	192	8		
	fe	190.5	9.5		

तालिका 9 उपरोक्त तालिका से हमें जानकारी प्राप्त हुई कि 400 छात्राओं में से 381 छात्राएं इस बात से सहमत है कि एक लड़के को शिक्षित करना एक व्यक्ति को शिक्षित करना होता है। जब कि एक लड़की को शिक्षित करना दो परिवारों को शिक्षित करना होता हैं तथा 19 छात्राऐं इस बात से असहमत है । X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 0.50 आया है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। सार्थकता के इस स्तर से यह पता चला कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों की महिलाओं की सोच में ज्यादा अन्तर नहीं है अधिकतर छात्राएं व महिलायें यह

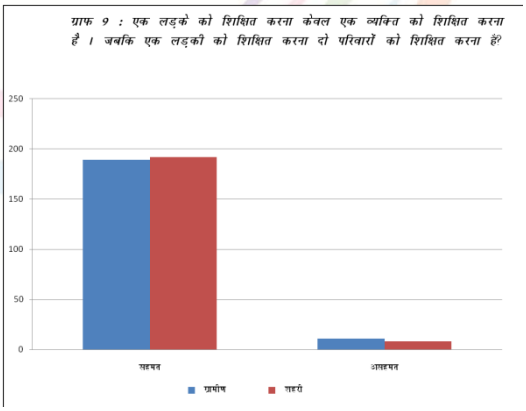

मानती हैं कि एक लड़के की शिक्षा को एक व्यक्ति की शिक्षा मानती थी जब कि एक लड़की को शिक्षित करना दो परिवारों को शिक्षित करना मानती हैं ।

प्रश्न नं० 10 : मुझे हरियाणा सरकार द्वारा 'मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति' की जानकारी है?

तालिका 10

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	161	39	4.89	0.01स्तर
	fe	169	31		
शहरी	f0	177	23		
	fe	169	31		

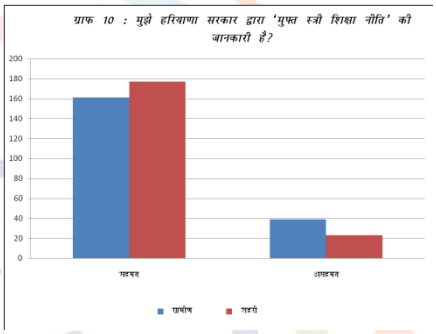

तालिका 10 सारणी से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 400 छात्राओं में से 338 छात्राएं इस बात के लिए सहमत है कि उन्हें हरियाणा सरकार द्वारा लागू मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति की जानकारी है तथा 62 छात्राओं को इस मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति की जानकारी नहीं है X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 4.89 आया है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। सार्थकता के इस स्तर से यह पता चला कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों की महिलाओं को हरियाणा सरकार द्वारा लागू मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति के बारे में जानकारी है। जिसके परिणाम स्वरूप यह हमें यह ज्ञात हुआ कि अधिकतर हरियाणा की छात्राओं को हरियाणा सरकार द्वारा लागू मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति की जानकारी दी जाती रही है ।

प्रश्न नं० 11 : मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति महिलाओं की साक्षरता दर को बढ़ाने में योगदान दे रही है ?

तालिका 11

		स्हमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	158	42	1.33	0.01स्तर
	fe	162.5	37.5		
शहरी	f0	167	33		
	fe	162.5	37.5		

तालिका 11 से यह जानकारी मिली कि 400 छात्राओं में से 325 छात्राएं इस बात से सहमत है कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति महिलाओं की साक्षरता दर को बढ़ाने में योगदान दे रही हैंजब कि 75 छात्राएं इस बात से असहमत है । वे मानती थी की शिक्षा नारी को समाज में आर्थिक रूप से सक्षम बनाती हैं और मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति महिलाओं को समाज में अपनी पहचान बनाने व अपने पैरों पर खड़ा होने के

सुअवसर प्रदान किया हैं । X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 1.33 आया है जो कि 0. 01स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि गाँव और शहर की महिलाओं की सोच में ज्यादा अन्तर नहीं निकला और अधिकतर छात्राएं व महिलायें इस बात से सहमत है कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति महिलाओं की साक्षरता दर को बढ़ाने में योगदान दे रही है

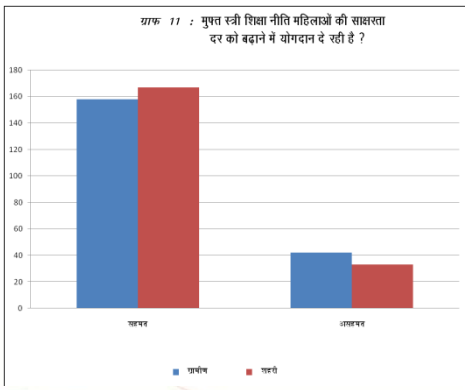

प्रश्न नं० 12 : मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति के लागू होने से मेरे माता–पिता मेरी पढ़ाई के प्रति रुचि रखने लगे हैं?

तालिका 12

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	155	45	19.11	0.01स्तर
	fe	170.5	29.5		
शहरी	f0	186	14		
	fe	170.5	29.5		

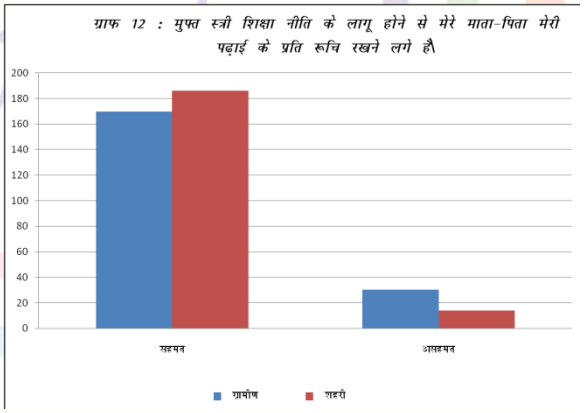

तालिका 12 सारणी से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 400 छात्राओं में से 341 छात्राएं इस बात के लिए सहमत है कि मुफ्त स्त्री शिक्षा के लागू होने से उनकी पढ़ाई के प्रति उनके माता–पिता प्रेरित हुए थे और 59 छात्राएं इसके लिए असहमति दर्शा रही थी । यदि ग्रामीण क्षेत्रोंमें देखा जाये तो 200 में से 155 छात्राएं इस बात से सहमत है की मुफ्त स्त्री शिक्षा के लागू होने से उनकी पढ़ाई के प्रति उनके माता–पिता प्रेरित हुए थे व 45 छात्राएं इस बात से असहमत है व शहरी क्षेत्रों के 200 परिवारों में से 186 परिवार सहमत और 14 परिवार असहमत है। इन तथ्यों यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण छात्राओं के माता–पिता की तुलना में शहरी छात्राओं के माता–पिता मुफ्त स्त्री शिक्षा के लागू होने से वे उनकी पढ़ाई के प्रति रूचि रखने लगे थे। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 19.11 आया है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। 0.01 सार्थकता से सिद्ध हुआ था कि अधिकतर छात्राओं के माता–पिता मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति के कारण उनको पढ़ाने में रुचि लेने लगे है।

प्रश्न नं० 13 : मेरे अनुसार मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति ने समाज में लड़कियों को पढ़ने एवं पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है?

तालिका 13

		सहमत	असहमत	χ^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	170	30	6.54	0.01स्तर
	fe	178	22		
शहरी	f0	186	14		
	fe	178	22		

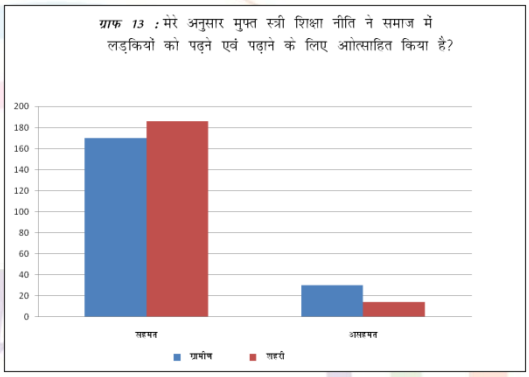

तालिका 13 से हमें जानकारी मिली कि 400 छात्राओं में से 356 छात्राएं इस बात को मानती हैं कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति ने समाज में लोगों को अपनी लड़कियों को पढ़ाने के प्रति प्रोत्साहित किया है, जब कि 44 छात्राएं असहमत हैं । तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश लड़कियों को हरियाणा सरकार की मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति ने पढ़ाने के प्रति प्रोत्साहित किया था और इस शिक्षा नीति से ग्रामीण व शहरों में स्त्रीयों के साक्षरता दर में वृद्धि प्राप्त हुई। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 6.54 आया है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। 0.01 सार्थकता से सिद्ध होता है कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति ने समाज में लड़कियों को पढ़ने एवं पढ़ाने के प्रति प्रोत्साहित किया था, अधिकतर छात्राएं इस बात से सहमत है।

प्रश्न नं० 14 : आपके अनुसार मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति में सुधार की आवश्यकता है?

तालिका 14

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	148	52	13.51	0.01स्तर
	fe	130.5	69.5		
शहरी	f0	113	87		
	fe	130.5	69.5		

तालिका 14 सारणी से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 400 छात्राओं में से 261 छात्राएं इस बात के लिए सहमत है कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति में सुधार की आवश्यकता है जब कि 139 छात्राएं इस बात से असहमत है। ग्रामीण क्षेत्रोंमें देखा जाये तो 200 में से 148 छात्राएं इस बात से सहमत है की मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति में सुधार की आवश्यकता है जब कि 52 छात्राएं इस बात से असहमत है व

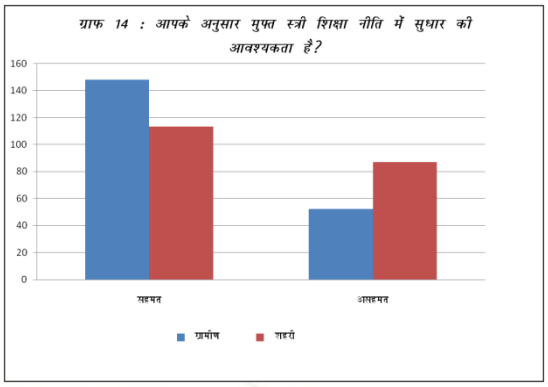

शहरी क्षेत्रों के 200 परिवारों में से 113 परिवार सहमत और 87 परिवार असहमत है। तथ्यों के आधार पर हम कह सकते है कि ग्रामीण क्षेत्राों में मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति में सुधार की आवश्यकता अधिक है। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 13.51 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को दर्शाता हैं। इस सार्थकता से सिद्ध होता था कि स्त्रीयों के विकास के लिए व उनके उत्थान के लिए मुफ्त स्त्री शिक्षा में सुधार की आवश्यकता है।

प्रश्न नं० 15 : मेरे अनुसार शिक्षा नारी के सम्पूर्ण विकास में सहायक है?

तालिका 15

		सहमत	असहमत	χ^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	193	7	0.84	0.01स्तर
	fe	194.5	5.5		
शहरी	f0	196	4		
	fe	194.5	5.5		

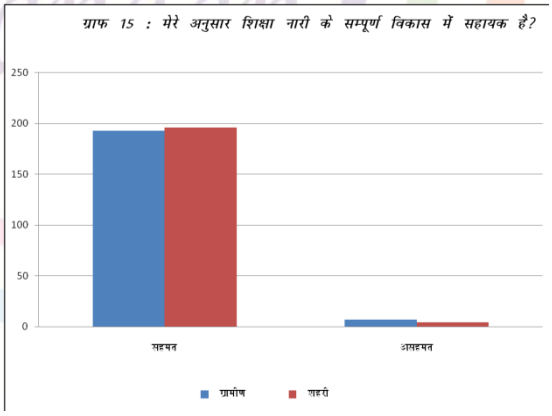

तालिका 15 से हमें यह जानकारी प्राप्त हुई कि 400 छात्राओं में से 389 छात्राएं सहमत है कि शिक्षा नारी के सम्पूर्ण विकास में सहायक है और 11 इस बात से असहमत है । प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण महिलाओं व शहरी महिलाओं के विचारों में ज्यादा भिन्नता नहीं पाई गई व सभी महिलाओं का मानना है कि शिक्षा नारी के सम्पूर्ण विकास में सहायक है। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 0.84 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। इस से सिद्ध होता है कि अधिकतर छात्राएं इस बात से सहमत है कि शिक्षा नारी के सम्पूर्ण विकास में सहायक होती हैं।

प्रश्न नं० 16 : क्या मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति से समाज में स्त्रियों का सम्मान बढ़ा है?

तालिका 16

		सहमत	असहमत	χ^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	156	44	0.55	0.01स्तर
	fe	159	41		
शहरी	f0	162	38		
	fe	1590	41		

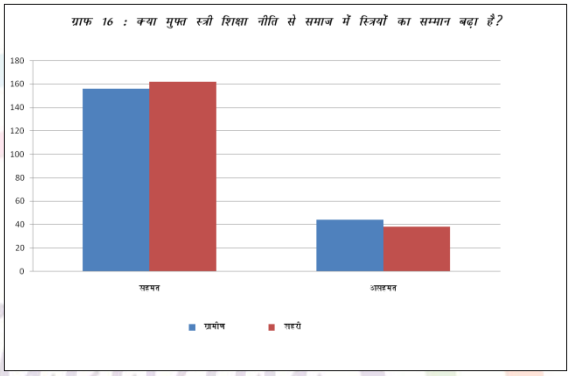

तालिका 16 सारणी से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 400 छात्राओं में से 318 छात्राएं इस बात के लिए सहमत है कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति से समाज में स्त्री का सम्मान बढ़ा है जब कि 82 छात्रा इस बात से असहमत है । X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 0.55 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं के विचारों में ज्यादा भिन्नता नहीं पाई गई है। सभी छात्राओं का मानना है कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति से महिलाओं को समाज के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलने का अवसर प्राप्त हुआ है। समाज की कुरितीयों से हो रहे स्त्रीयों पर शोषण का विरोध शिक्षित नारीयों के द्वारा किया गया। इससे सिद्ध होता था कि अधिकतर छात्राएं 'मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति' से समाज में स्त्री का सम्मान बढ़ा है, इस बात से सहमत है ।

प्रश्न नं० 17 : शिक्षा नारी को आर्थिक रूप से सक्षम बनाती हैं?

तालिका 17

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	189	11	1.54	0.01स्तर
	fe	191.5	8.5		
शहरी	f0	194	17		
	fe	191.5	8.5		

तालिका 17 से यह जानकारी मिली कि 400 छात्राओं में से 383 छात्राएं इस बात से सहमत है कि शिक्षा नारी को समाज में आर्थिक रूप से सक्षम बनाती है। जब कि 17 छात्रा इस बात से असहमत है । तथ्यों से स्पष्ट होता है कि गाँव की छात्राएं व शहर की छात्राओं का यह मानना है कि समाज में

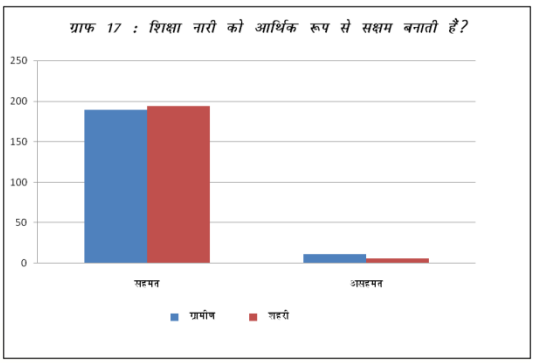

जब नारी शिक्षित होती है, तो वह अपने घर के कामों के साथ–साथ बाहर नौकरी या बिजनेस इत्यादि करती है। ताकी उन्हे किसी पर निर्भर ना रहना पड़े। महिलाओं के इन प्रयासों से समाज का आर्थिक स्तर अच्छा होता हैं। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 1.54 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। इससे सिद्ध होता है कि अधिकतर छात्राएं इस बात से सहमत है कि शिक्षा नारी को आर्थिक रूप से सक्षम बनाती हैं।

प्रश्न नं० 18 : क्या शिक्षित नारी दो परिवारों को शिक्षित बनाती है?

तालिका 18

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	196	4	0.41	0.01स्तर
	fe	195	5		
शहरी	f0	194	6		
	fe	195	5		

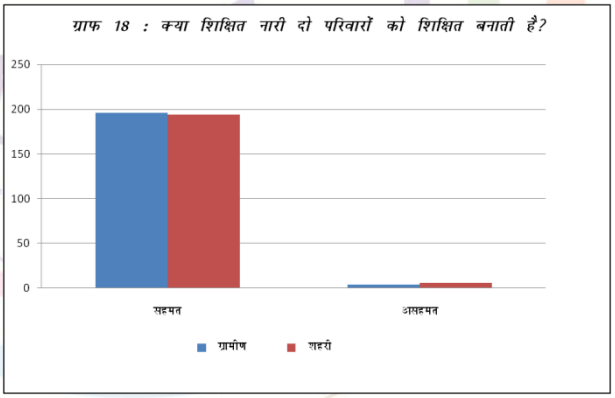

तालिका 18 से यह जानकारी मिली कि 400 छात्राओं में से 390 छात्राएं इस बात से सहमत है कि शिक्षित नारी दो परिवारों को शिक्षित बनाती हैं। जब कि 10 छात्राएं इस बात से असहमत है। तथ्यों से स्पष्ट होता है कि गाँव की छात्राओं व शहर की छात्राओं का यह कथन है कि समाज में जब नारी शिक्षित होती है, तो वह अपने ससुराल में बच्चों को व अपने बच्चों को शिक्षित करती है। जिससे यह सिद्ध होता है शिक्षित नारी दो परिवारों को शिक्षित बनाती है। X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 0.41 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। इससे सिद्ध होता था कि गाँव व शहर की अधिकतर छात्राओं/महिलाओं की सोच समान रूप से एक समान ही प्रतीत होती है। अधिकतर छात्राएं इस बात से सहमत है कि नारी शिक्षा नारी को आर्थिक रूप से सक्षम बनाती हैं।

प्रश्न नं० 19 : क्या शिक्षित नारी में आत्मसम्मान अधिक होता है?

तालिका 19

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	198	2	0.20	0.01स्तर
	fe	197	2.5		
शहरी	f0	197	3		
	fe	197	2.5		

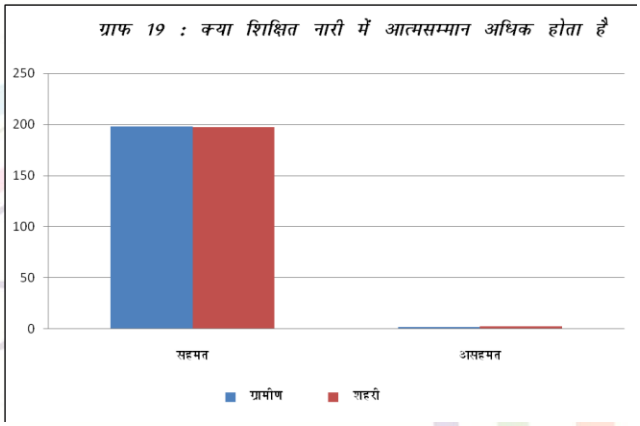

तालिका 19 से जानकारी मिली कि 400 छात्राओं में से 395 छात्राएं यह मानती हैं कि शिक्षित नारी आत्मसम्मान अधिक होता है । जब कि 5 छात्राएं इससे असहमत है । X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 0.20 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। सार्थकता के इस स्तर से यह सिद्ध हुआ कि शिक्षित नारी में आत्मसम्मान अधिक होता है, अधिकतर छात्राएं इस बात से सहमत थीं।

प्रश्न नं० 20 : मेरे अनुसार मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति स्त्री को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध हुई है?

तालिका 20

		सहमत	असहमत	X^2 का मूल्य	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	f0	169	31	9.97	0.01स्तर
	fe	173.5	26.5		
शहरी	f0	178	22		
	fe	173.5	26.5		

तालिका 20 सारणी से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 400 छात्राओं में से 347 छात्राएं इस बात के लिए सहमत है कि सभी छात्राओं का मत था कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति स्त्री को आत्मनिर्भर बनाती हैं। जब कि 53 छात्राएं इस बात से असहमत है । तथ्यों से स्पष्ट होता है कि गाँवकी महिलायें व शहर की दोनो ही महिलाओं का यह मानना है कि समाज में जब नारी अशिक्षित होती है, तो उसे अपने पति व अन्यो पर निर्भर होना पड़ता है, जब नारी शिक्षित होती है, तो वह अपने ससुराल में अपने पति के साथ घर के और बाहर के सभी कार्यों को संभालती है। जिससे यह सिद्ध

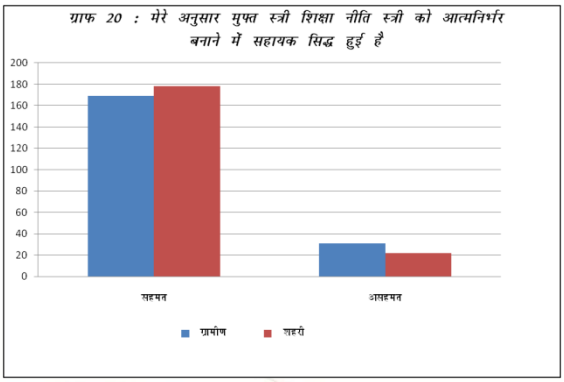

ग्राफ 20 : मेरे अनुसार मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति स्त्री को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध हुई है

होता है नारी शिक्षित होने के बाद आत्मनिर्भर बनाती हैंव मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति स्त्री को आत्मनिर्भर बनाती हैं X^2 परीक्षण की गणना के पश्चात् X^2 का मूल्य 1.76 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता को नहीं दर्शाता हैं। इससे सिद्ध होता था कि गाँवव शहर की अधिकतर छात्राएं/महिलाओं की सोच में ज्यादा अन्तर प्रतीत नहीं होता है। अधिकतर छात्राएं इस बात से सहमत है कि शिक्षा नारी को आर्थिक रूप से सक्षम बनाती हैं।

परिणाम

शोधकर्ता ने इस शोध कार्य में कुरुक्षेत्र जिले के स्त्री शिक्षा के विकास पर मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति के प्रभाव का अध्ययन किया जिसके परिणाम निम्नलिखित थे :

- स्त्री शिक्षा को बढ़ाने में शिक्षित माता–पिता का योगदान पाया गया तथा यह जाना जा सका कि अधिकतर परिवारों में लड़की को पढ़ाना पसन्द किया जाने लगा है ।
- अधिकतर परिवार अपनी लड़कियों को उच्च शिक्षा दिलाने के पक्ष में पाये गए ।
- लगभग परिवार शिक्षा से सम्बंधित लड़के या लड़कियों में भेदभाव नहीं करते । जिसका अर्थ निकलता है कि अधिकतर परिवार स्त्री शिक्षा के महत्व को समझने लगे हैं ।
- अधिकतर लड़कियों का यह मत है, यदि उनके शिक्षा सम्बन्धी भेदभाव किया गया जाएगा तो वे निश्चित रूप से इसका विरोध करेंगी ।
- अधिकतर लड़कियों सहशिक्षा को उचित मानती हैं ।
- शत प्रतिशत छात्राओं का यह मत है कि उन्हें हरियाणा सरकार की मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति की जानकारी है और वे मानती हैंकि यह नीति स्त्री साक्षरता दर को बढ़ाने में सहायक हो सकी हैं ।
- छात्राओं का यह मानना है कि इस नीति के लागू होने से उनके माता–पिता उनकी शिक्षा के लिए प्रेरित हुए हैं तथा इस शिक्षा नीति ने उन्हें भी पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है ।
- अधिकतर लड़कियाँ मानती हैं कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति के लागू होने से उनका समाज में सम्मान बढ़ा हे, वे आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक रूप से सक्षम हुई हैंऔर उनके आत्म–सम्मान की भावना में वृद्धि हुई हैं।
- शत् प्रतिशत छात्राओं का मत है कि शिक्षित नारी से परिवार शिक्षित होता है, जो इन्हें आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक है।

- अधिकतर का भी मानना है कि मुफ्त स्त्री शिक्षा नीति के लागू होने से स्त्री शिक्षा को बढ़ावा मिला है तथा स्कूलों में छात्राओं की उपस्थिति भी बढ़ी हैं।
- शत् प्रतिशत अध्यापक ऐसा मानते हैंकि इस नीति के कारण स्त्री शिक्षा के प्रति समाज की सोच में सकारात्मक बदलाव आया है, जिससे माता–पिता अपनी लड़कियों को शिक्षित करने के लिए प्रेरित हुए हैं ।
- अधिकतर अध्यापकों का मत है यदि लड़कियों को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से प्रोत्साहित किया जाए तो इस नीति के प्रभावशाली परिणाम सामने लाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगें।
- लगभग सभी छात्राओं एवम् अध्यापकों का मत है कि इस नीति में अभी और अधिक सुधार की आवश्यकता है, यदि इस नीति में सुधार किया जाए तो हमारे लिए शत् प्रतिशत स्त्री साक्षरता दर को पाना असम्भव नहीं होगा ।

सन्दर्भ गन्थ सूची

अगवाल, भी० स्व०, (1982) हरियाणा में स्त्री शिक्षा
उपाध्याय, भ० (1975) भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस दिल्ली,
श्रीवास्तव, डी०एन० (2000) अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन टागरा
कपिल, एच०के०(1989) अनुसंधान विधियाँ, हर प्रसाद भागव आगरा
कौल लो० (1998) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशर्ज नई दिल्ली
गुप्ता, एस०पी० (1992) सांख्यिकी के सिद्धांत सुल्तानचन्द एण्ड सन्स नई दिल्ली,
थोमस पी०(1964) युगों से महिलाएं, एशिया पब्लिशिंग हाउस बम्बई
शिक्षा विभाग हरियाणा (1994) बजट की प्रति
रस्तोगी, कृ०गो० (1995) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़
भारतीय संविधान, (1950) 15, 16 अनुच्छेद
मनुस्मृति (1909) बम्बई : निर्णय सागर प्रेस अध्याय 3, श्लोक 56, पृ0 288
राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग नई दिल्ली